October To December 2015
SCHOLARS IMPACT
Quarterly
Research Journal
Online : ISSN-2394-7632
Print : ISSN-2394-7640

7

स्त्री–शिक्षा के सन्दर्भ में प्रेमचन्द व निराला के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 दीपिका जायसवाल
प्रवक्ता–हिन्दी
deepika12jaiswal@gmail.com

स्त्री–शिक्षा से अभिप्राय केवल अक्षर ज्ञान नहीं अपितु स्त्री का शिक्षित होकर, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने आत्म सम्मान को जागृत करना भी है। शिक्षा ऐसा अचूक अस्त्र है जिससे समाज की समस्त बुराइयों को नष्ट किया जा सकता है। हमारे समाज की स्त्रियों की उन्नति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा अशिक्षा है। यदि स्त्रियाँ अधिक पढ़–लिख लेंगीं तो अपने अधिकारों को जान जायेंगी, जिससे उनमें अपनी अवनति के पति जागरूकता आ जायेगी और वे अपने अधिकारों की माँग करने लगेंगी। समाज की इसी विकृत सोच के कारण स्त्रियों को पढ़ाया लिखा नहीं जाता। प्रेमचन्द और निराला दोनों ही समाज की इस विकृत मानसिकता से परिचित थे इसी कारण वे स्त्री–शिक्षा पर अधिक जोर देते हैं। स्त्री–शिक्षा के अभाव में स्त्रियों की क्या दुर्दशा होती है? इस ओर इंगित करते हुए निराला कहते हैं– 'हमारे देश में स्त्रियों की शिक्षा के अभाव से जैसी दुर्दशा हो रही है, उसकी वर्णना असंभव है। उनका लांछन देखकर पाषाण भी गल जाते हैं। प्रतिवर्ष भारतवर्ष का आकाश स्त्रियों के क्रंदन से गूँजता रहता है। युवती विधवाओं के आसुओं का प्रवाह प्रतिदिन बढ़ता जाता है। प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की तरह घेर रखा है।''[1] उनका मत है कि शिक्षित और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक स्त्रियाँ ही समाज में बदलाव ला सकती हैं क्योंकि स्त्रियाँ ही समाज की धुरी हैं। ''स्त्रियों को शिक्षित देवियों के रूप में परिणत करो, जिससे वे स्वयं अपने कल्याण की कल्पना कर सकें, नहीं तो, हे! देशवासियों, प्रतिदिन तुम्हारे ऊपर स्त्री–हत्या का पाप चढ़ रहा है। इससे तुम्हारा निस्तार न होगा।''[2]

प्रेमचन्द भी स्त्री–शिक्षा पर बल देते हुए कहते हैं– स्त्रियाँ शिक्षित हों और उसके साथ–साथ स्त्रियों को वह अधिकार मिल जाये जो सब पुरुषों को मिले हुए हैं।''[3] उनके अनुसार हमें अपने लड़कों की भाँति लड़कियों को भी शिक्षित करना चाहिए और जीवन के सभी निर्णय लेने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। वे कहते हैं – 'लड़कियों को अच्छी शिक्षा दी जाय और उन्हें संसार में अपना रास्ता आप बनाने के लिए छोड़ दिया जाय, उसी तरह जैसे हम अपने लड़कों को छोड़ देते हैं।''[4]

वैषम्य:

प्रेमचन्द और निराला के स्त्री–शिक्षा सम्बन्धी विचारों में साम्य के साथ–साथ दृष्टिभेद भी दृष्टिगोचर होता है। निराला के विचार से जितने भी धार्मिक आडम्बर, सामाजिक कुरीतियाँ व कुप्रथायें हैं जो स्त्रियों की अवनति का मूल कारण हैं उन सबका नाश शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। अपनी ''बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियाँ'' शीर्षक टिप्पणी में इसी बात की पुष्टि करते हुए वे कहते हैं– ''जितने प्रकार के दैन्य हैं, जितनी कमजोरियाँ हैं उन सबका शिक्षा के द्वारा ही नाश हो सकता है, क्योंकि संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है। अशिक्षित, अनपढ़ होने क कारण ही हमारी स्त्रियों को संसार में नरक यातनायें भोगनी पड़ती हैं– उनके दुःखों का अन्त नहीं होता।''[5]
उनकी दृष्टि में ज्ञान का इतना अधिक महत्व है कि वे ज्ञान को स्वाधीनता का पर्याय मानते हैं। उनकी दृष्टि में ''ज्ञान कभी पराधीन नहीं रह सकता। बल्कि यदि एक ही शब्द में स्वाधीनता की परिभाषा की जाय, तो वह ज्ञान ही होगा।''[6]

जबकि प्रेमचन्द के विचारों में अन्तर्विरोध देखने को मिलते हैं। जहाँ एक 'दुःखी बाप शीर्षक टिप्पणी' में वे कहते हैं ''लड़कियों को अच्छी शिक्षा दी जाय और उन्हें संसार में अपना रास्ता अपने आप बनाने के लिए छोड़ दिया जाय, उसी तरह जैसे हम लड़कों को छोड़ देते हैं।''[7] वहीं दूसरी तरफ अपने परम मित्र दयानारायण निगम को 30 जून सन् 1935 को लिखे गये पत्र में लड़कियों की उच्च शिक्षा का विरोध करते हैं। उनके शब्दों में– भाई, मैं तो तालीमयाफ्ता लड़कियों की जानिब से खुदाजाने क्यों बदगुमान हूँ। अभी तक लड़कों की लापरवाहियों के बावजूद गृहस्थी चलती रहती थी, क्योंकि लड़कियाँ आमतौर पर गृहस्थी का पालन करती थीं। लेकिन जब दोनों एक ही रंग में रंग गये तो फिर खुदा ही हाफिज है। लड़कों को देखता हूँ तो जी चाहता है कि युनिवर्सिटी में न पढ़ते तो अच्छा होता। घमण्डी, बदतमीज, दुःशील, मिजाज में हर दर्जा उद्दण्डता, सहानुभूतिशून्य, उजड्ड–'अक्खड़। यह आम रविश है। अपवाद भी है, लेकिन बहुत कम। लड़कियों में भी यह दोष नुमायाँ। आखिर उन्होंने अपने भाइयों ही से तो सबक लिया है। मैं उन्हें दोष नहीं देता। वह भी सौलाब में बह रही हैं तो उन गरीबों का क्या कसूर है।''[8] वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जिससे नैतिकता का विकास हो। 'महिला महाविद्यालयों में 'बिहारी सतसई' शीर्षक टिप्पणी में वे लिखते हैं– ''जिन पुस्तकों में श्रृंगार का नग्न और निर्लज्ज रूप दिखाया गया हो, उन्हें लड़कियों से ही क्यों, लड़कों से भी उठा देना चाहिए।''[9] इससे स्पष्ट है कि प्रेमचन्द भारतीय आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप शिक्षा देने के पक्ष में थे। डॉ0 बालकृष्ण पाण्डेय के अनुसार– अच्छी शिक्षा से उनका तात्पर्य भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से है क्योंकि वह पश्चिमी शिक्षा के विरोधी हैं।[10] इस सन्दर्भ में अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' में लिखा है कि प्रेमचन्द स्वयं अपनी बेटी को भी नहीं पढ़ा पाये थे। इसके कारणों का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं– आज जहाँ अनपढ़ लड़कियों पर उँगलियाँ उठती हैं, चालीस–पैंतालीस साल पहले (उस समय) पढ़ी–लिखी लड़की पर उठा करती थीं। लड़की को पढ़ाना अपने आप में एक क्रान्ति थी। दूसरा कारण बताते हुए वे कहते हैं– उसका बड़ा कारण यह है कि पढ़ी–लिखी लड़कियों की तरफ से उनके मन में कहीं यह चोर था कि लड़कियाँ पढ़–लिखकर गृहस्थी के काम की नहीं रह जाती, तितली

बनकर यहाँ–वहाँ घूमते रहने में ही उनका जी लगता है। अगर इससे अलग भी कोई बात उनके मन में थी तो वह कमजोरी और चारों तरफ एक पिछड़ा हुआ समाज था जो लड़कियों की पढ़ाई को अच्छी निगाह से नहीं देखता था। लिहाजा बेटी घर के भीतर और घर के बाहर समाज के पिछड़ेपन का शिकार हुई और मामूली हिन्दी से ज्यादा कुछ न पढ़ सकी।''[11] उनकी 'प्रयाग महिला विद्यापीठ की साहित्यिक प्रगति' शीर्षक टिप्पणी से भी इन्हीं बातों की पुष्टि होती है– विद्यापीठ ने कम से कम खर्च में अच्छी से अच्छी शिक्षा देने का आदर्श अपने सामने रखा है। वह बालिकाओं को केवल तीन साल में वर्नाक्यूलर फाइलन की परीक्षा के लिए तैयार कर देता है इसके साथ ही पाक कला, संगीत, व्यायाम का भी प्रबन्ध कर दिया है। इससे ज्यादा खुशी इस बात से हुई कि यहाँ की विदुषियाँ तितलियाँ बनकर नहीं गृह देवियाँ बनकर निकलती हैं। जो जीवन के किसी क्षेत्र में अपने गृह–विज्ञान कौशल से अपने लिए स्थान बना सकती हैं।''[12]

निराला स्त्री–शिक्षा को स्त्रियों की उन्नति के लिए ही नहीं अपितु देश के विकास के लिए भी अनिवार्य मानते हैं। उनके मतानुसार– ''ज्ञान राशि भी यदि हर तरफ से हमारे राष्ट्र की नारियों को पराश्रित कर रखे, तो उनके हृदय से निकला हुआ स्वतंत्रता का स्रोत भी पर–राष्ट्र–सागर–वाही होगा, उसका प्रवाह कभी भी अपने ज्ञान के महासागर की ओर नहीं हो सकता।''[13] उनका मत था कि शिक्षा के द्वारा ही नारी को विवेकशील बनाया जा सकता हैं अशिक्षा के कारण ही हमारी स्त्रियाँ उचित निर्णय लेने में असमर्थ होती हैं और इसी कारण पीढ़ी–दर–पीढ़ी शोषण का शिकार होती हैं। इस सन्दर्भ में डॉ0 शिवकुमार दीक्षित के विचार उल्लेखनीय हैं– नारी यदि विवेकहीन होती है तो वह केवल अपना नाश नही करती, वरन् आने वाली पीढ़ी भी पथभ्रष्ट हो जाती है। अशिक्षा ने नारी के विवेक को वर्चस्वी नहीं होने दिया। नारी शिक्षा पर निराला के विचार बहुत व्यावहारिक और स्वीकार्य हैं।''[14] निराला के विचार से स्त्री शिक्षा के बिना सुख–शान्ति की कल्पना करना व्यर्थ है। ''जब तक हमारी गृह देवियाँ लक्ष्मी तथा सरस्वती के रूपों में हमारे गृह का अंधकार दूर नहीं करती तब तक सुख तथा शान्ति की कल्पना पुरुषों के मस्तिष्क की एक बहुत बड़ी भूल है, यह हर एक भारतवासी को समझ लेना चाहिए। लक्ष्मी तथा सरस्वतियों को कैद करना भी अपने ही अंधकार के दीपक को गुल कर देना है।... ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है और स्त्रियें की मानहानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मानहानि है।''[15] वे चाहते थे कि शिक्षित होकर स्त्रियाँ स्वावलम्बी बनें। क्योंकि ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है। निर्वाह होना कठिन है। स्वावलम्बन नहीं आता। स्वावलम्बन कोई पाप नहीं प्रत्युत पुण्य है।[16] इस सन्दर्भ में डॉ0 राम विलास शर्मा कहते हैं– स्त्री शिक्षा से निराला की दिलचस्पी का एक विशुद्ध साहित्यिक कारण भी था। लड़का जब तक माँ से खड़ी बोली न सुनेगा, तब तक वह सहजभाव से खड़ी बोली को मातृभाषा के रूप में ग्रहण करके, हिन्दी का महान लेखक नहीं बन सकता। बच्चे अपनी माँ से साफ–सुथरी खड़ी बोली सुनें, इसके लिए स्त्रियों में शिक्षा प्रचार अत्यन्त आवश्यक था।''[17] स्त्रियाँ यदि अनपढ़ रह गयीं, यदि उन्हीं की जबान न मँजी, तो बच्चा पढ़कर भी कुछ कर नहीं सकता। मौलिकता का मूल बच्चे की माता है। भाषा का सुधार, संशोधन स्त्रियाँ ही करती हैं। जब तक वर्तमान खड़ी बोली स्त्रियों के मुख से मँजकर नहीं निकलती, तब तक उसमें कोमलता का आना स्वप्न

है। वही बच्चा भविष्य के हिन्दी साहित्य का महाकवि है, जिसे अपनी माता के मुख से साफ–शुद्ध, मार्जित, सरल, श्रुति–मधुर तथा मनोहर खड़ी बोली के सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।''[18] शिक्षा के अभाव में स्त्रियाँ अपनी बुद्धि और कला को भूल गयी हैं शिक्षा के द्वारा ही इन्हें जागृत किया जा सकता है। निराला के शब्दों में– ''विद्या के न रहने से हमारे देश की स्त्रियाँ मेधा–बुद्धि तथा कला–बुद्धि तथा कला–कौशल को भी खो चुकी है। विद्या–बुद्धि से रहित मनुष्य मनुष्यता से गिरकर इतर श्रेणी में चला जाता है।''[19]

शिक्षा के आलोक से स्त्रियों का अन्धकारमय जीवन कैसे चमक उठता है? कैसे उनके जीवन की दिशा परिवर्तित हो जाती है? इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए निराला कहते हैं– ''शिक्षा से देवियाँ अपना दिव्य रूप पहचानेंगी। उन्हें अपने कर्तव्य का ज्ञान होगा। वे नदियों की तरह समाज के करारों से बहती हुई सहस्त्रों जीवन प्रतिदिन पवित्र कर जायेंगी। उनका जो स्थान संसार की स्त्रियों में है, उसे प्रात करेंगी। राष्ट्र की स्वतंत्रता की उपासना में उनके जो अधिकार हैं उन्हें ग्रहण कर अपने कर्तव्य का पालन करेंगी। बच्चों की पीड़ा के समय उन्हें तड़पना न होगा। वे उनकी दवा कर उन्हें रोगमुक्त कर सकेंगी। समाज की नृशंसता, जो प्रतिदिन बढ़ती जाती है, उन पर अपना अधिकार न जमा सकेंगी। जरूरत पड़ने पर वे स्वयं उपार्जन करके अपना निर्वाह कर सकेंगी। प्रतिदिन एक ही प्रकार का भोजन खाते–खाते जो जी ऊब जाता है, ऐसा नहीं होगा। वे अनेक प्रकार के भोजन पकाने की विधियाँ सीख लेंगी और संसार में रह, संसार के यथार्थ सुखों का अनुभव करेंगी। कहा है, संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर हैं।''[20] निराला ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी का अनुभव किया था इसीलिए वे चाहते थे कि शहरों के साथ–साथ गाँवों में भी शिक्षा की ज्योति जले, क्योंकि उस समय शिक्षा का प्रसार शहरों तक ही सीमित था।'' किन्तु अधिकांश स्त्रियाँ गाँवों में रहती थीं, निराला के अनुसार इनमें शिक्षा प्रसार के बिना भारतीय महिला–समाज शिक्षित न कहला सकता था।''[21] गाँवों में शिक्षा की कमी को दूर करने का बहुत ही व्यावहारिक और उपयुक्त सुझाव दिया है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। उनके शब्दों में– देहात में शिक्षा की बहुत कमी है, वहाँ लड़कों को ही मदरसा भेजना दुश्वार है। ... जहाँ लड़कों का यह हाल है, वहाँ लड़कियों की बात ही क्या? हर एक गाँव से जितनी भीख निकलती है, यदि उतना अन्न रोज एकत्र कर लिया जाय, तो गाँव में ही एक छोटी सी पाठशाला खोल दी जा सकती है। एक शिक्षक की गुजर उससे हो जायेगी। अविद्या का जो यह प्रबल मोह फैला हुआ है। यह न रह जायेगा। बलिकाओं के लिखने–पढ़ने का गाँव में ही प्रबन्ध हो सकता है। इस तरह उनके प्रति सच्चा न्याय गाँव वाले ही कर सकते हैं। शहरों में तो लड़कियों को पढ़ाने के अनेक साधन हैं।''[22]

सन्दर्भः

1– निराला रचनावली–6–सम्पादक–नंदकिशोर नवल (बाहरी स्वाधीता और स्त्रियाँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2006, पृ0 129
2– वही पृ0 131
3– प्रेमचन्द घर में– शिवरानी देवी, पृ0 218, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, संस्करण, 2005
4– प्रेमचन्द के विचार, भाग–2 (एक दुःखी बाप) पृ0 257
5– निराला रचनावली–6–संपादक नन्द किशोर नवल (बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियाँ) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2006, पृ0 130
6– वही (राष्ट्र और नारी) पृ0 290
7– प्रेमचन्द के विचार, भाग–2 (एक दुखी बाप) पृ0 256
8– चिट्ठी–पत्री भाग–1, संकलनकर्ता अमृत राय, पृ0 213
9– प्रेमचन्द के विचार, भाग–2, पृ0 259 प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली से, 2010
10– प्रेमचन्द विचारधारा और साहित्य– डॉ0 बालकृष्ण पाण्डेय, पृ0 166 शिल्पी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2003
11– कलम का सिपाही– अमृत राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद सस्करण, 1992पृ0 422–434
12– प्रेमचन्द के विचार, भाग–2–पृ0 240
13– निराला रचनावली–6–सम्पादक नन्द किशोर नवल (राष्ट्र और नारी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2006, पृ0 290
14– निराला के निबन्धों का अनुशीलन–डॉ0 शिवकुमार दीक्षित पृ0 99 आराधना ब्रदर्स कानपुर, संस्करण 1980
15– निराला रचनावली–6– पृष्ठ 131–132 (बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियाँ) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2006।
16– वही पृ0 130
17– निराला की साहित्य साधना–2–डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0 39, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972
18– निराला रचनावली–6– सम्पादक नन्द किशोर नवल, पृ0 131, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्कण, 2006
19– वही, पृ0 131
20– वही, पृ0 129
21– निराला की साहित्य साधना–2–डॉ0 रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972, पृ0 40
22– निराला रचनावली–6–सम्पादक नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2006 पृ0 130